9. प्राचीन इतिहास पर परीक्षा उपयोगी तथ्य

- गुप्त सम्राट वैष्णव धर्म के अनुयायी थे।
- गुप्त काल का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पूर्ण व्यापारिक केन्द्र उज्जैन था।
- गुप्त वंश का प्रथम महान शासक चंद्रगुप्त प्रथम था। इसने 319 ई॰ में गुप्त संवत् चलाया।
- समुद्र गुप्त को उसके विजयी अभियान के कारण भारत का नेपोलियन कहा जाता है।
- समुद्रगुप्त का दरबारी कवि हरिषेण था। इसने इलाहाबाद प्रशस्ति लेख की रचना की।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय चीनी बौद्ध यात्री फाहियान भारत आया।
- इसने शकों पर विजय के उपलक्ष्य में चांदी का सिक्का चलाया।
- नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना कुमार गुप्त ने की थी।
- स्कन्दगुप्त ने गिरनार पर्वत पर स्थित सुदर्शन झील का पुनरुद्धार किया।
- स्कन्धगुप्त के शासनकाल में हूर्णों का आक्रमण शुरू हुआ।
- गुप्त राजाओं ने सर्वाधिक सोने के सिक्के जारी किये! सोने के सिक्को को दिनार कहते थे।
- पहली बार सती होने का अभिलेखीय प्रमाण 510 ई॰ में भानूगुप्त के ऐरण अभिलेख से मिलता है।
- गुप्तकाल में देवगढ़ (झांसी) का दशावतार मंदिर एवं कानपुर का भीतर-गांव मंदिर का निर्माण हुआ।
- कालीदास चन्द्रगुप्त द्वितीय के दरबारी कवि थे।
- गुप्तकाल में धनवन्तरी प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य हुए।
- आर्यभट्ट ने आर्यभट्टीय एवं सूर्य सिद्धान्त नामक ग्रंथ लिखे।
- मंदिर बनाने की कला की शुरूआत गुप्तकाल में हुई।
- गुप्तकाल को स्वर्ण युग भी कहा जाता है।
- समुद्रगुप्त ने विक्रमांक की उपाधि धारण की। इसे कविराज भी कहां जाता है।
- सबसे ज्यादा भूमि अनुदान गुप्तकाल में ही किया गया था।
- रामायण व महाभारत का अंतिम रूप से सम्पादन गुप्तकाल में हुआ था।
- सांस्कृतिक उपलब्यिों के कारण गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग कहा जाता है।
- **प्रशासनिक इकाई अधिकारी**

(1) देश	गोप्ता
(2) मुक्ति	उपरिक
(3) विषय	विषयपति
(4) पेठ	पेठपति
(5) ग्राम	महतर (ग्रामपति)

- **अधिकारी** **विभाग / पद**

(1) महाबलाधिकृत	सेना का सेनापति
(2) महादण्डनायक	न्यायधीश
(3) संधिविग्राहक युद्ध	मंत्री
(4) दण्डपाशिक	पुलिस अधिकारी
(5) सार्थवाह	व्यापारिक प्रधान

(6) महापक्षरलिक लेखा विभाग का सर्वोच्च अधिकारी

- **गुप्तकालीक कर**

(1) भाग : भूमि उपज का 1/6 भाग
(2) भोग : राजा को प्रतिदिन दी जाने वाली सब्जी, फल
(3) उद्रंग व उपरिकर : भूमि कर
(4) हिरण्य : नकद कर
(5) मेय : अन्न के रूप में लिया जाने वाला कर

- **भूमि के प्रकार :**

(1) क्षेत्र	: खेती के लिए उपयुक्त भूमि
(2) वास्तु	: वास करने योग्य
(3) खिल	: जो भूमि जोती नहीं जाती हो
(4) अप्रहत	: बिना जोती गई जंगली भूमि

गुप्तकालीन मंदिर

(1) लक्ष्मण मंदिर	शिरपुर (छत्तीसगढ़)
(2) धमेख स्तूप	सारनाथ
(3) पार्वती मंदिर	नचना कुठार (मध्य प्रदेश)
(4) दशावतार मंदिर	देवगढ़
(5) भीतरगांव	कानपुर
(6) शिव मंदिर	भूमरा (एम.पी)

पुष्यभूति वंश

- पुष्यमूति वंश की स्थापना नरवर्द्धन ने की थी।
- इस वंश की शुरूआत थानेश्वर नामक स्थान पर हुई।
- सबसे प्रसिद्ध शासक हर्षवर्धन था। इसने अपनी राजधानी कन्नौज को बनाया।
- हर्ष शिलादित्य के नाम से जाना जाता था।
- हर्षचरित का लेखक बाणभट्ट हर्षवर्धन का दरबारी कवि था।
- हर्ष ने कन्नौज व प्रयाग में दो धार्मिक समाओ का आयोजन किया था।
- हर्षवर्धन की रचना- नागानंद, रत्नावली, प्रियदर्शिका।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग हर्षवर्धन के समय भारत आया।

वंश	संस्थापक	राजधानी
पल्लव	सिंह विष्णु	कांची
राष्ट्रकूट	दन्तिदुर्ग	मान्यखेत
चालुक्य (कल्याणी)	तैलप द्वितीय	मान्यखेत
चालुक्य (वेंगी)	विष्णु वर्धन	वातापी
चोल	विजयालय	तंजौर
पाल	गोपाल	मुंगेर
सेन वंश	सामन्त सेन	नदिया
प्रतिहार	नागभट्ट प्रथम	कन्नौज
चौहान	वासुदेव	अजमेर
गहड़वाल	चन्द्रदेव	काशी/वाराणसी

कुछ महत्वपूर्ण तथ्य :-

- लक्ष्मीधर गोविदंचद गडवाल के दरबार में रहता था। उसने प्रसिद्ध विधिग्रंथ कल्पद्रुम की रचना की।
- एलोरा का कैलाश मंदिर कृष्ण प्रथम ने बनवाया
- अमोघवर्ष जैनधर्म का अनुयायी था। इसने कविराज मार्ग की रचना की।
- इन्द्र III के शासनकाल में अरब निवासी अलमसूदी भारत आया।
- मिताक्षिरा की रचना विज्ञानेश्वर ने की ।
- चोल काल में काशु सोने के सिक्के थे।
- ऐलोरा एवं एलीफैंटा के गुहा मंदिरों का निर्माण राष्ट्रकूटों के समय हुआ।
- खजुराहों का मंदिर चंदेलों ने बनवाया।
- राजाराज प्रथम ने तंजौर में राजराजेश्वर का शिव मंदिर बनवाया।
- स्थानीय स्वशासन चोल प्रशासन की मुख्य विशेषता थी।
- पाल वंश के धर्मपाल ने विक्रमशिला विश्वविद्यालय का निर्माण कराया।
- पल्लव शासक नरसिंह वर्मन द्वितीय ने कांचीपुरम के कैलाश मंदिर का निर्माण किया।
- पल्लव शासक नरसिम्ह वर्मन द्वितीय ने महाबलिपुरम के मंदिर का निर्माण किया।
- कल्हण हर्ष का दरबारी कवि था।
- राजा भोज परमार वंश के थे।

लेखक		पुस्तक
पाणिनी	–	अष्टाध्यायी
कौटिल्य/चाणक्य	–	अर्थशास्त्र
मेगास्थनीज	–	इंडिका
पतंजली	–	महाभाष्य
अश्वघोष	–	बुद्ध चरित
कालीदास	–	अभिज्ञानशाकुन्तल, कुमार
सम्भव, मेघदूत, शुद्रक	–	मृच्छ कटिकम
विशाखादत्त	–	मुद्राराक्षस, देवीचन्द्रम
विष्णुशर्मा	–	पंचतत्रं
वात्स्यायन	–	कामसूत्र
सिद्धसेन	–	न्यायावतार
असंग	–	योगाचार
भारवि	–	किरातर्जुनियम
महेन्द्र वर्मन	–	मत्त विलास प्रहसन
भवभूति	–	मालती माधव
विल्हण	–	विक्रमांक देवचरित
जयदेव	–	गीत गोविन्द
चन्दरबरदाई	–	पृथ्वीराजरासो
कल्हण	–	राज तरंगिनी
जयनक	–	पृथ्वी राज विजय
जिनसेन	–	आदिपुराण
वराहमिहिर	–	वृहत्तसंहिता, पंचसिद्धान्तिका
आर्यभट्ट	–	आर्यभट्टीय, सूर्य सिद्धान्त
ब्रह्मगुप्त	–	ब्रह्म-सिद्धान्त

वाग्भट्ट	–	अष्टांग हृदय
हर्षवर्धन	–	नागानन्द, रत्नावली, प्रियदर्शिका
बाण भट्ट	–	हर्षचरित,कादम्बरी
दण्डिन	–	काव्य दर्शन, दशकुमारचरित

प्रमुख विदेशी यात्री	**दरबार**
मेगास्थनीज (यूनानी)	चन्द्रगुप्त मौर्य
डायोनिसियस (मिस्र)	बिन्दुसारा
फाहयान	चन्द्रगुप्त द्वितीय
ह्वेनसांग	हर्षवर्धन

- हेरोडोटस को 'इतिहास का पिता' कहा जाता है। इन्होंने 5वीं शताब्दी ई॰पू॰ में 'हिस्टोरिका' नामक पुस्तक की रचना की, जिसमें भारत और फ्रांस के बीच सम्बन्धों का वर्णन है।
- अलबरूनी ने किताबुल-हिन्द की रचना की। इसमें राजपूत कालीन समाज, धर्म, रीति-रिवाज आदि पर सुन्दर प्रकाश डाला गया है।
- शाहनामा की रचना फिरदौसी ने की है।

EduBull.com